परदेस में तालियां, घर में गालियां

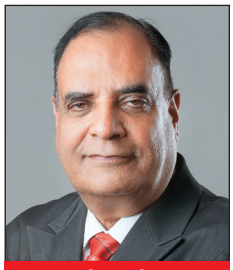

आलोक मेहता

सऊदी अरब और बेल्जियम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जोशीले भाषण पर जोरदार तालियां बजीं। सऊदी अरब में बुर्का पहनी महिलाओं की भीड़ के बीच प्रसन्न मुद्रा में मोदी के चित्र टी.वी. और अखबारों में दिखाई दिए। यूरोप, अमेरिका, सऊदी अरब या दुबई में प्रधानमंत्री परदेसी निवेशकों को 'मेक इन इंडिया' के लिए भारत आमंत्रित कर रहे हैं और इधर भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में उनके मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस गरजकर चेतावनी दे रहे हैं- 'भारत माता की जय नहीं बोल सकने वाले बाहर चले जाएं।' मोदी जी अकेले विदेश नहीं जाते हैं। उनके कई मंत्री, मुख्यमंत्री, पार्टी या संघ के नेता दुनिया भर का दौर करते रहते हैं। विदेशों में विश्व हिंदू परिषद की शाखाएं हैं। भारतीय मूल के लाखों लोग दुनिया भर में बसे हुए हैं। बड़ी संख्या में लोगों ने व्यापार-धंधे या कामकाज के लिए उन देशों की नागरिकता ले रखी है लेकिन वे जय जर्मनी, जय अमेरिका, जय आस्ट्रेलिया, ब्रिटिश महारानी की जय या अरब सुल्तान की जयकार करते नहीं दिखते। वे वहां के नियम-कानून का पालन अवश्य करते हैं। ओमान या ईरान के शासक या चीन के राष्ट्रपति प्रवासी भारतीयों को कतार में खड़ा कर जय बुलवाने का फरमान जारी नहीं करते। ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के हिंदुजा बंधु घोषित रूप से देश के सबसे संपन्न व्यक्ति हैं लेकिन उन्हें आज भी ब्रिटेन से ज्यादा भारत भूमि से प्यार है। लंदन, न्यूयॉर्क, हाइडलबर्ग ही नहीं, बीजिंग, टोक्यो, सिंगापुर, सिडनी और एथेंस में सैकड़ों विदेशी छात्र भारतीय संस्कृति, संस्कृत-हिंदी और परंपरा से लगाव रखते हैं। उन्हें अपने देश की जयकार की मजबूरी नहीं समझाई जाती।

आजादी के आंदोलन में जो लोग कांग्रेस पार्टी या नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज से जुड़े हुए नहीं थे और आर्थिक कारणों से सरकारी सेवा में भी थे, क्या उन्हें भारत भूमि से प्यार नहीं था? अंग्रेजों के साथ उन्हें देश छोड़ने के लिए तो किसी ने नहीं कहा। उस समय विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाती थी। लेकिन अब तो सरदार वल्लभ भाई पटेल की विशाल प्रतिमा लगाने तक के लिए विदेशी सहयोग लेने में हर्ज नहीं समझा जा रहा है। नरसिंह राव, मनमोहन सिंह और अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल की अपेक्षा इस समय केंद्र और राज्यों की भाजपा सरकारों के नेता देश-विदेश में सम्मेलन आयोजित कर अधिकाधिक विदेशी पूंजी लाने का आग्रह कर रहे हैं। यदि फड़णवीस, योगी आदित्यनाथ जैसे नेता हर तीसरे दिन भारत में रहने की शर्तें तय करने लगेंगे तो भारत को किस तरह प्रगति के रास्ते पर ले जाएंगे? यही नहीं, कल्पना कीजिए दुबई, ओमान, तेहरान, लंदन, न्यूयॉर्क, बर्लिन, टोक्यो, शंघाई में भारतीयों के लिए भी उन देशों के प्रति वफादारी के नाम पर देश छोड़ने को कहा जाने लगे तो केरल से गुजरात और गुवाहाटी से अमृतसर तक की अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ेगा? प्रवासी भारतीयों ने न केवल उन देशों के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान दिया है, अपनी मेहनत की कमाई का बड़ा हिस्सा भारत भेजकर भारतीय विदेशी मुद्रा के भंडार को समृद्ध किया है। आप खाड़ी के देशों, अफ्रीका या यूरोप में भारतीय देवी-देवताओं के मंदिर देखकर अभिभूत होते हैं लेकिन उन देशों के नेताओं ने कभी इस पर आपत्ति नहीं की। इसके विपरीत उदारतापूर्वक मंदिर, गुरुद्वारे आदि बनाने के लिए हरसंभव सहायता दी। श्रीकृष्ण से गौतम बुद्ध और गुरु नानक जी के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने वालों में लाखों विदेशी होते हैं। लेकिन भारत में कट्टरपंथियों का एक वर्ग अन्य धर्मों के उपासना केंद्रों के निर्माण पर आपत्ति करने के अलावा यदा-कदा हिंसक हमले तक करते हैं और 'उदार' सरकारें उन पर कठोर कार्रवाई नहीं करतीं केवल नए-नए नारे गढ़ने, उन्माद भड़काने, जय-जयकार करवाने से क्या भारत का सर्वांगीण विकास हो सकेगा? कूपमंडूक रहकर क्या आप पर्यटन के लिए दुनिया के लोगों को आमंत्रित कर सकेंगे? असल में सत्ताधारियों को अपनी राजनीतिक तलवारों के साथ जुबान को काबू में रखना होगा।

छाया: पीटीआई

छाया: फोटो कॉर्प

दो रंग: रियाद यात्रा में मुस्लिम महिलाएं मोदी के साथ सेल्फी लेती हुईं, देश में फड़णवीस ने भारत माता की जय पर विवादित बयान दिया

www.outlookhindi.com